केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र. (भारत)

Central Institute for Subtropical Horticulture

Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

आम के पुराने एवं अनुत्पादक बागों का जीर्णोद्धार

- देश के आम उत्पादक क्षेत्रों मे लगभग 35–40 प्रतिशत बाग पुराने व अनुत्पादक हो गये हैं जो कि जीर्णोद्धार हेतु सर्वथा उपयुक्त है।
- संस्थान ने 'दशहरी' आम के जीर्णोद्धार की तकनीक का मानकीकरण किया है जिसमें दिसम्बर माह में वृक्षों की गहरी कटाई भूमि से लगभग 3 मी. की ऊँचाई पर करते हैं।
- इस दौरान केवल 3–4 फैलाव वाली शाखाओं को रखते हैं तथा शेष शाखाओं को उनकी उत्पत्ति के स्थान से काट देते हैं।
- उचित पोषण प्रबंधन हेतु प्रति वृक्ष 2.5 किग्रा. यूरिया, 3.0 किग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 1.5 किग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश और 50 किग्रा. गोबर की सड़ी खाद अनुमोदित है।
- काटे गये वृक्षों में मार्च से बरसात आनें तक 15–20 दिनों के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये।
- रखी गयी शाखाओं पर बसंत ऋतु में बहुतायत में कल्ले आते हैं। मई और जुलाई माह में अवांछित प्ररोहों (नयी शाखाओं) का विरलीकरण करते हैं ताकि प्रति शाखा 6–8 द्वितीयक शाखाएं विकसित हों।
- इस प्रकार दो वर्ष पश्चात् स्वस्थ एवं अच्छी कैनॉपी विकसित हो जाती है जिसमें तीसरे वर्ष से पुष्पन व फलन प्रारम्भ हो जाता है।
- कटाई से प्राप्त लकड़ी को बेचने से एवं अन्तः फसलों को उगानें से बागवान को अतिरिक्त आमदनी होती है।
- ऐसे बागों से पहले की तुलना में 4 से 5 गुना अधिक उपज प्राप्त होती है। वृक्षों में सूर्य के प्रकाश की अधिक उपलब्धता के कारण फलों के आकार एवं गुणवत्ता में भी बढ़ोत्तरी होती है।

Phone :0522-2841022, 2841023, 2841024 Fax :0522-2841025

website:www.cishlko.org; E-mail:director@cish.ernet.in